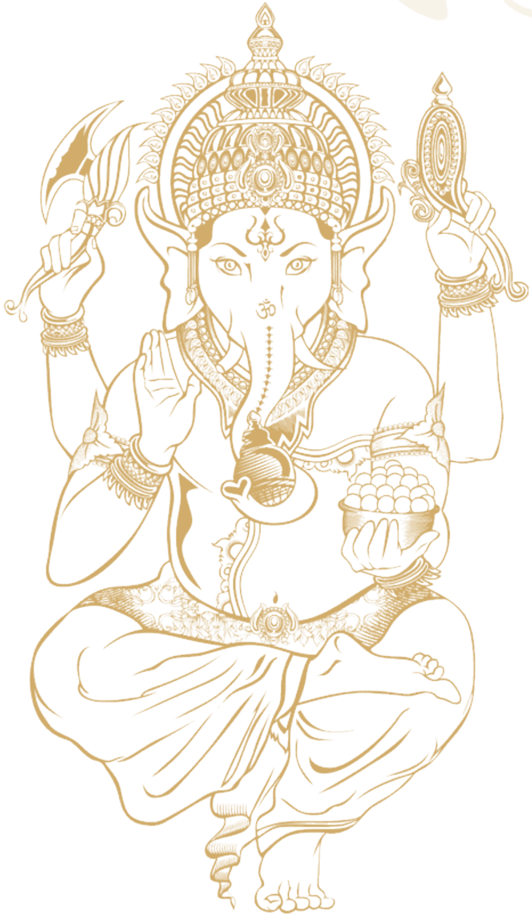

Ms Shivya

10 Aug 2025

09:27 PM

Ghazipur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119176801

तिथि 10/08/2025 **समय** 21:27:00 **वार** रविवार **स्थान** Ghazipur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:58
अक्षांश 25:36:00 उत्तर **रेखांश** 83:36:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:04:24 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	18:48:56 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:05:23 घं	योनि	अश्व
सूर्योदय	05:26:31 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:34:49 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मेष
मास	भाद्रपद	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	2	जन्म नामाक्षर	सा-सपना
नक्षत्र	शतभिषा	पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
योग	शोभन	होरा	बुध
करण	तैतिल	चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी		योगिनी	
राहु 12वर्ष 1मा 17दि		धान्या 2वर्ष 0मा 8दि	
राहु		धान्या	
10/08/2025		10/08/2025	
28/09/2037		19/08/2027	
	00/00/0000		00/00/0000
	10/08/2025		10/08/2025
शनि	10/09/2027	भद्रिका	18/08/2025
बुध	29/03/2030	उल्का	17/02/2026
केतु	17/04/2031	सिद्धा	18/09/2026
शुक्र	16/04/2034	संकटा	20/05/2027
सूर्य	11/03/2035	मंगला	19/06/2027
चन्द्र	09/09/2036	पिंगला	19/08/2027
मंगल	28/09/2037		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:29:21	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			24:03:45	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	मंगल	मित्र राशि	1.34	आत्मा	पितृ	क्षेम
चंद्र			11:00:48	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.31	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			08:05:16	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.16	ज्ञाति	भ्रातृ	वध
बुध	व		10:03:26	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.09	पुत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			19:31:34	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	मंगल	शत्रु राशि	1.22	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			18:00:37	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि	1.48	भ्रातृ	कलत्र	जन्म
शनि	व		07:03:11	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.00	कलत्र	आयु	विपत
राहु	व		24:17:06	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		24:17:06	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

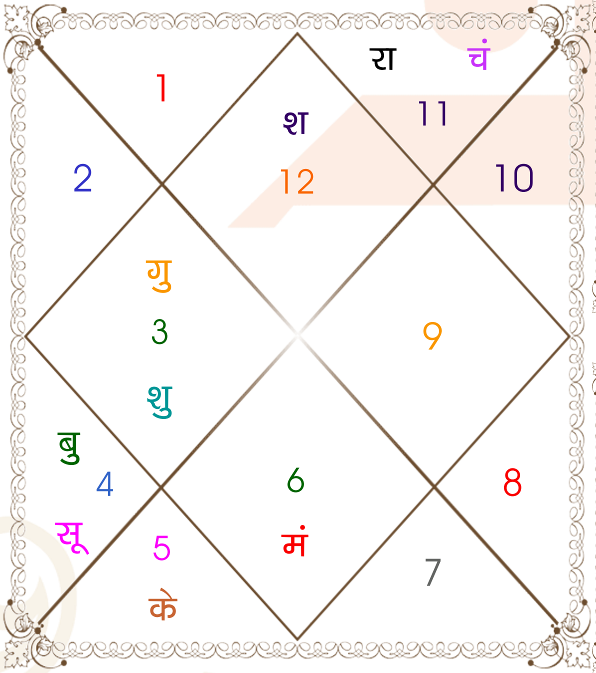

चन्द्र कुंडली

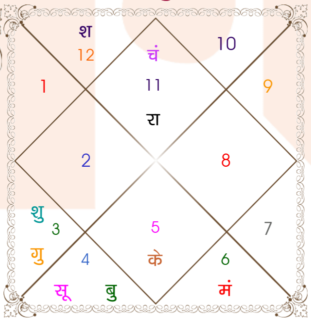

नवमांश कुंडली

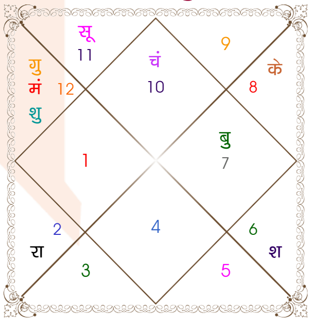

सर्वाष्टकवर्ग

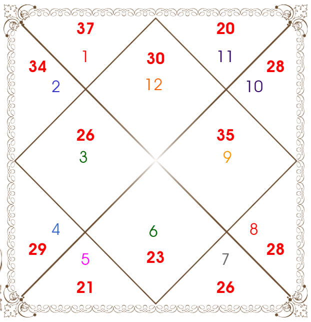

दशमांश कुंडली

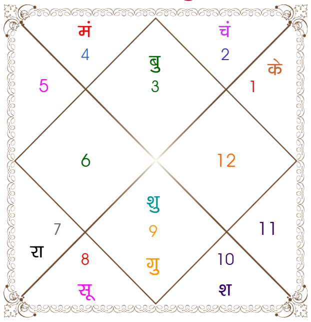

FLAIR KNOWLEDGE
ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE
Upanagar, Nashik - 422006
9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956
flairknowledge@gmail.com

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण राक्षस तथा योनि अश्व होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणपनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "स" या "सा" अक्षर से होगा यथा- सरिता, सविता आदि।

आप ठंड से भयभीत रहेंगी तथा इसे सहन करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगी। आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा अत्यन्त साहसिक कार्यो को करने के लिए सदैव उत्सुक तथा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके अधिकांश कार्य भी साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप कठोरता के भाव के अधिक रूप में प्रदर्शन करेंगी एवं दया तथा करूणा का भाव आप में अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप एक चतुर महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यो को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। साथ ही अन्य लोग भी आपको चतुराई से प्रभावित रहेंगे तथा आपका यथायोग्य सम्मान भी करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे एवं आपसे प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोऽनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्रा के प्रति आपके मन में प्रारम्भ से ही श्रद्धा तथा रूचि रहेगी एवं इसका आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इसके साथ ही अपने समस्त कार्यो को आप शान्त चित्त से सम्पन्न करेंगी। आपको अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर एवं प्रियकर लगेगा तथा उसके लिए आप नित्य रूचिशील रहकर आनन्द की अनुभूति करेंगी।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ऽल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आपके पास धन सम्पति की विपुलता रहेगी एवं समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में प्रसिद्ध होगी परन्तु आप कंजूसी की वृति से युक्त रहेंगी। अतः धन को उन्मुक्त रूप से व्यय करने में असमर्थ रहेगी तथा संचय के प्रति आपका विशेष ध्यान रहेगा। पुरूषवर्ग में आप आदरणीय तथा प्रिय समझी जाएंगी एवं उससे आपको यथायोग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा। साथ ही अवसरानुकूल आप उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त

आप विदेश में अधिकांश रूप से भ्रमण करती रहेंगी।

कृपणो धनपूर्णः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप हमेशा स्पष्ट बोलने में विश्वास रखेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक अपनी इस प्रवृति का जीवन में अनुपालन करती रहेंगी। साथ ही कई प्रकार के व्यसनों आदि का भी आपको शौक रहेगा तथा इनका आप आस्वादन करती रहेंगी। साथ ही आप दुराग्रही प्रवृति की महिएा भी होंगी तथा अपने कार्यो या बात पर ही अडिग रहेंगी चाहे वह सही हो या न हो

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यो में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यो में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यो पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक उन्नत होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत आकार का रहेगा। साथ ही हाथ, पैर एवं कमर में स्थूलता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में लावण्यता की अल्पता रहेगी परन्तु इसमसे आपका सौन्दर्य विशेष प्रभावित नही होगा एवं उसमें सौन्दर्य तथा आकर्षण बना रहेगा। आपके अर्न्तमन में विद्रोह की भावना भी रहेगी। इसके साथ ही आपके स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। धर्म में भी आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी। आप की प्रवृति आलसी भी होगी शिल्प या चित्रकारी में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं के कारण व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आपका प्रभाव रहेगा तथा कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में रहेगी। इसके साथ ही शत्रुवर्ग का नाश करने में भी आप नित्य सफल रहेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप की प्रवृति अप्रत्यक्ष रूप से क्रूर कार्यों को करने में भी प्रवृत रहेगी या आप इन कार्यों में अपना अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करेंगी। यात्रा तथा भ्रमणादि करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी। अतः अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। आप दूसरे के धन को प्राप्त करने की नित्य इच्छा करेगी तथा इसके साथ ही धन के प्रति आप में लालच का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः क्षय वृद्धि से युक्त रहेगी अर्थात् इसके अतिरिक्त सुगधित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आप उपयोग समय समय पर करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप में श्रेष्ठ विद्वानों के गुण विद्यमान रहेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा भी रहेगी परन्तु अन्य विद्वान जनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंक्षी इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

जीवन के हर क्षेत्र में आप अधिकांश रूप से विजयी तथा सफल रहेंगी एवं जीवन में सदाचार का यत्नपूर्वक पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। धनवैभव से आप प्रायः सुशोभित रहेंगी लेकिन यदा कदा इसका अभाव भी आपके पास रहेगा। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल आप इनकी सेवा तथा सहायता के लिए तत्पर रहेंगी एवं पुरूष वर्ग में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप विशाल परिवार की स्वामिनी होंगी तथा आपकी जाति या वर्ग के लिए जो भी अच्छा कार्य होगा उसको अपने पूर्ण प्रयत्नों से सफल करेंगी। अतः जाति तथा बन्धुवर्ग में आपको उचित मान सम्मान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कई सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी था

जीवन में इसका अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घ तथा शरीर की नसे भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होगी। समाज तथा कार्यक्षेत्र में आप पुरूषों से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही मित्रवर्ग के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव भी रहेगा तथा उनका सहयोग करने के लिए आप सदैव उद्यत रहेगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऽध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप एक दानी प्रवृति की महिला होंगी तथा जीवन में यत्नपूर्वक इस प्रवृति का अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी। इस प्रवृति से आपको सामाजिक प्रतिष्ठा तथा ख्याति भी अर्जित होगी तथा दूर दूर तक लोग आपको जानेंगे। साथ ही कृतज्ञता का भाव भी आप में रहेगा एवं अन्य जनों को उपकृत होने पर भी उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक धन्यवाद भी करेंगी। आपकी आखें सुन्दरता से युक्त दर्शनीय रहेगी तथा बुद्धि भी सरलता से युक्त रहेगी तथा किसी के साथ धोखा या प्रपंच नहीं करेंगी। इस प्रकार अपने मृदु व्यवहार तथा अन्य सद्गुणों के कारण आप समाज में प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता को अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा स्वभुजबल से धनार्जन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वाहन आदि साधनों से भी आप सुशोभित रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक रूप से बोलने वाली होंगी एवं हृदय में दया एवं करूणा के भाव की रहेगी परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहस पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। साथ ही क्रोध की भी अधिकता आप में होगी एवं अकारण ही इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप की

आपमें विवादादि करने की भी इच्छा रहेगी तथा अन्य जनों से आपका परस्पर कलह आदि होता रहेगा। लेकिन शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगी।

जीवन में यदा कदा उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकती हैं। साथ ही आपके सौन्दर्य भी सामान्य आकर्षक रहेगा। आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न अप्रहन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होगी एवं अपने कार्यकलापों में बाह्य हस्तक्षेप पसन्द नहीं करेंगी। आप में सद्गुणों की भी अधिकता रहेगी एवं शौर्यगुणों से भी आप युक्त रहेंगी एवं अपने कार्य कलापों को साहस तथा निर्भयता से सम्पन्न करेंगी। आप एक तेजस्वी महिला होंगी तथा आपके तेज से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही वीणा आदि वाद्य यंत्रो को बजाने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें दक्षता प्राप्त करेंगी। आप एक ईमानदार तथा विश्वास योग्य महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण विश्वसनीय तथा सम्मानित समझी जाएंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी

आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग तथा वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा

नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर सर्वत्र शुभ प्रभावों की वृद्धि होगी एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।